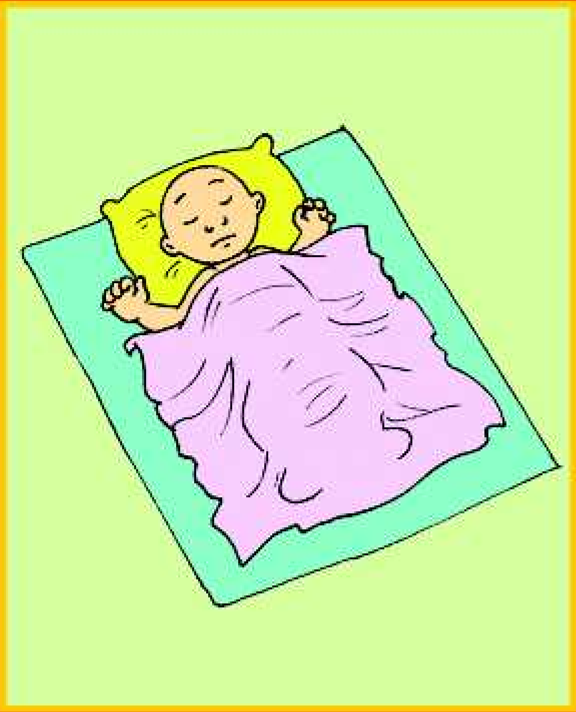

नवजात शिशुओं में होने वाली समस्याएं

(नियोनेटल सेप्सिस)

नियोनेटल सेप्सिस का अर्थ होता है किसी नवजात शिशु में किसी गंभीर संक्रमण का होना, जैसे फेफड़े, मस्तिष्क या रक्त का संक्रमण।

हमारे देश में प्रत्येक १० बच्चे में एक में नियोनेटल सेप्सिस की समस्या होती है और उनमें से कई मौत के मुंह में समा जाते हैं। हालांकि यदि इसका पता लगा लिया जाता है और सही इलाज किया जाता है तो अधिकतर बच्चे अच्छे हो जाते हैं और स्वस्थ्य तरीके से वृद्धि करते हैं।

नियोनेटल सेप्सिस के कारण

माँ को गर्भावस्था के दौरान या प्रसव के समय होने वाला संक्रमण।

प्रसव के समय प्रयोग की जाने वाली बगैर सफाई वाली तकनीक या उपकरण।

बगैर सफाई वाले तरीके से नाभि नाल को काटना या चीज़ों को नाभि नाल पर रखने से भी संक्रमण हो सकता है।

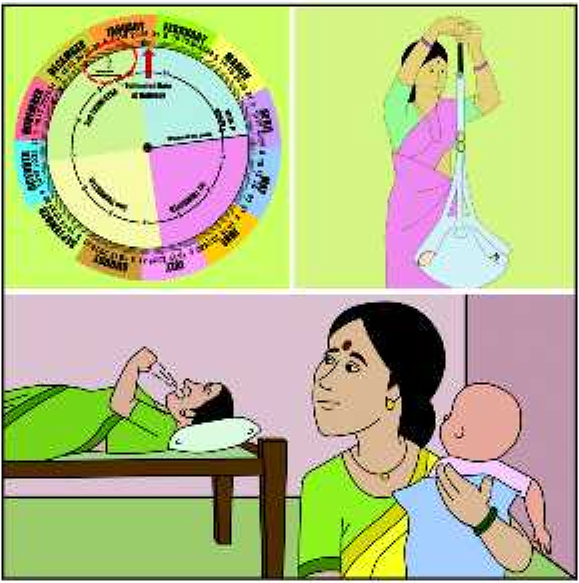

समय से पूर्व बच्चे का जन्म या जन्म के समय कम वजन तथा उससे होने वाली कमजोरी।

बच्चे को ठंडे माहौल में रखने या स्तनपान जल्दी नहीं शुरु करने या केवल स्तनपान न कराने से आने वाली कमजोरी।

बच्चा किसी ऐसे व्यक्ति के (माँ, परिवार के अन्य सदस्य, आशा) संपर्क में आता है, जिसे संक्रमण हो।

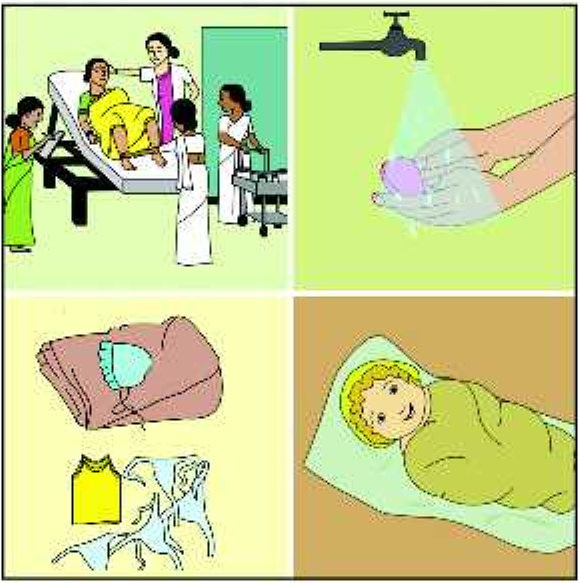

सेप्सिस को कैसे रोका जाए?

बेहतर आरोग्य: प्रसव के दौरान उपकरण को साफ करें; कई बार हाथ धोएं; साफ कपड़ों का इस्तेमाल करें।

सर्दियों के मौसम में बच्चे को गर्म रखें।

शीघ्र स्तनपान शुरु करना तथा केवल स्तनपान कराना।

नाभि नाल को साफ तथा शुष्क बनाए रखें।

खतरे के क्या संकेत हैं?

इनमें से कोई संकेत मिलने पर बच्चे को आशा या ए.एन.एम. अथवा डॉक्टर को दिखाएं:

- हाथ-पैर शिथिल हो जाए
- बच्चा स्तनपान करना बंद कर दे
- शिशु की छाती अंदर की ओर धंस जाए
- शिशु को छूने पर ठंडा अनुभव हो
- शिशु को बुखार हो

शिशु का गर्भ में रहने की अवधि	दिनों की संख्या	खुराक
पूरे समय से जन्म लेने वाले शिशु	७ दिन	दिन में दो बार
समय पूर्व जन्म लेने वाले शिशु	१० दिन	

सेप्सिस से बचाव कैसे करें?

बच्चे को किसी डॉक्टर को दिखाएं। सेप्सिस का उपचार डॉक्टर द्वारा बेहतर तरीके से किया जा सकता है। वे आपको सही दवा का सुझाव देंगे।

डॉक्टर को दिखाने में देर होने पर आप बच्चे को दिन में दो बार ७ दिनों तक कॉर्टिमोक्साजोल सिरप दे सकते हैं (यदि बच्चे का जन्म समय से हुआ हो), या यही खुराक आप १० दिनों तक दे सकते हैं (यदि बच्चे का जन्म समय से पहले हुआ हो तो) ।

बच्चे को किसी डॉक्टर या नर्स को दिखाएं। सेप्सिस की पुष्टि होने पर वे इंजेक्शन के जरिए एंटीबायोटिक्स देंगे - जेन्टामायसिन इंजेक्शन जो सामान्यत: दिन में एक बार दिया जाएगा।

पी.एच.सी.
९ ५ डिग्री फारेनहाइट
से कम

यदि निम्न में से कोई खतरे वाला लक्षण दिखाई पड़े तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें:

एंटीबायोटिक्स उपचार के बाद बच्चा यदि २४ घंटे तक कोई प्रतिक्रिया न दे।

बच्चा यदि पहले दिन ही पीला पड़ जाए या बाद के १४ दिनों तक उसे पीलिया रहे।

२४ घंटे तक गर्मी देने के बाद भी यदि बच्चे का तापमान ९५ डिग्री फॉरेनहाइट से कम हो।

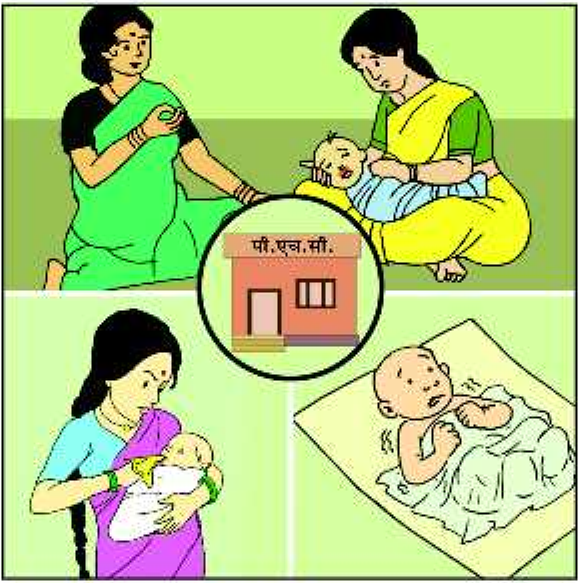
पी.एच.सी.

यदि निम्न में से कोई खतरे वाला लक्षण दिखाई पड़े तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें:

बच्चे की नाक, मुंह या मलद्वार से यदि खून आता हो।

यदि बच्चे में टिटैनस के लक्षण हों- चौथे दिन के बाद ऐंठन, दूध चूसने या मुंह खोलने में असमर्थ हो।

बच्चे के शरीर में यदि अकड़न आ जाए।

NATIONAL RURAL HEALTH MISSION